

५

ଅନ୍ତର୍ଜାଲ ପରିଷକ୍ଷଣା ଅନ୍ତର୍ଜାଲ ପରିଷକ୍ଷଣା

५०

五

藏文：༄༅ ། བ ད ས ར མ ཉ ག ང

ॐ एकाग्रं विग्रं व्याप्तं प्रियं कृपं कुरु । अऽस्मि त्वं प्रियं कृपं कुरु ॥

۲۷۰

ऐक्षु के दृष्टिकोण में यह अनुरूप है।

五

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ